❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा विभेर्न मरिष्यसि।।

अथर्व. 5/30/8

हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।

O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 38 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 17 जुलाई, 2017 से रविवार 23 जुलाई, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 4

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

# भारतीय मुस्लिम समाज और देश

*.....कुछ दिनों से भारत की आंतरिक शक्ति और सुरक्षा को इसी देश के कुछ नागरिकों से खतरा हो गया है। उनके दुष्प्रयासों को रोकने में बड़ी शक्ति सेना, सी. आर. पी. और सुरक्षा बल, की लग रही है। इस आग को और बढ़ाने में पड़ोसी राष्ट्र पूरी मदद कर रहा है। हर संभव प्रयत्नशील है, इस देश की आन्तरिक स्थिति को बिगाड़ने के लिए राष्ट्रीय दुश्मनों के हाथों इसी देश के किशोर व नवयुवक अपने ही देश में पाकिस्तान की जय-जयकार कर रहे हैं, आतंकवादियों, घुसपैठियों के विरूद्ध की जा रही कार्यवाही में वे बाधक बन रहे हैं। पत्थर, सेना व सुरक्षा बलों पर फेंक रहे हैं। आतंकवाद को रोकने में मदद करने के स्थान पर उनका साथ दे रहे हैं। देश की गोपनियता भंग कर रहे हैं। सीमा पार से घुसपैठियों का देश में प्रवेश करने में सहयोग, सुरक्षा और आश्रय दे रहे हैं। गालिब का शेर है - गैरों से तमन्नाये क्या करना, अपने वाले ही मिट्टी में मिला देते हैं या यूँ कहें घर को आग लग रही घर के चिराग से।...*

**- प्रकाश आर्य**

नैतिकता का यह मानना है कि किसी भी व्यक्ति का सर्वोच्च धर्म राष्ट्र धर्म होता है। राष्ट्रीय धर्म को सर्वोपरि मानकर उसके लिए त्याग तपस्या या बलिदान करने वाले किसी जाति सम्प्रदाय, मजहब तक अपना स्थान नहीं बनाते, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र उनके प्रति नत्मस्तक व कृतज्ञ होता है। स्वतन्त्रता की लड़ाई में भारत माता के वीर सपूत अश्फाक उल्लाह खाँ हों चाहे परमवीर चक्र से नवाजे अमर शहीद अब्दुल हमीद हो अथवा हाल ही में कश्मीर में शहीद हुए डी.एस.पी. आयूब पण्डित हों। इन सबने सम्मान उन्होंने अपनी जाति या मजहब के नाम पर नहीं पाया किन्तु अपने राष्ट्रीय धर्म को सर्वोपरि मानते हुए अपनी कुर्बानियां दी हैं, इसलिए पूरा देश आहत होता है, नत्मस्तक है। यह भी सम्भव था यदि जाति अथवा सम्प्रदाय के लिए बलिदान होता तो एक वर्ग विशेष तक सीमित रहता और इतना सम्मान नहीं पाते।

विगत कुछ दिनों से भारत की आंतरिक शक्ति और सुरक्षा को इसी देश के कुछ नागरिकों से खतरा हो गया है। उनके दुष्प्रयासों को रोकने में बड़ी शक्ति सेना, सी. आर. पी. और सुरक्षा बल, की लग रही है। इस आग को और बढ़ाने में पड़ोसी राष्ट्र पूरी मदद कर रहा है। हर संभव प्रयत्नशील है, इस देश की आन्तरिक स्थिति को बिगाड़ने के लिए राष्ट्रीय दुश्मनों के हाथों इसी देश के किशोर व नवयुवक अपने ही देश में पाकिस्तान की जय-जयकार कर रहे हैं, आतंकवादियों, घुसपैठियों के विरूद्ध की जा रही कार्यवाही में वे बाधक बन रहे हैं। पत्थर, सेना व सुरक्षा बलों पर फेंक रहे हैं। आतंकवाद को रोकने में मदद करने के स्थान पर उनका साथ दे रहे हैं। देश की गोपनियता भंग कर रहे हैं। सीमा पार से घुसपैठियों का देश में प्रवेश करने में सहयोग, सुरक्षा और आश्रय दे रहे हैं।

गालिब का शेर है-

**गैरों से तमन्नाये क्या करना,**
**अपने वाले ही मिट्टी में मिला देते हैं**
या यूँ कहें
**घर को आग लग रही घर के चिराग से।**

देश के अनेक सपूत इस राष्ट्र विरोधी गतिविधि को रोकने में अपने प्राण गवां चुके हैं। मजहबी कट्टरता का नंगा नाच पूरे क्षेत्र में व देश के कुछ अन्य भागों में हो रहा है।

यह सब कौन कर रहा है? किस जाति सम्प्रदाय के व्यक्तियों का सहयोग इन्हें प्राप्त है? कौन देश के खूंखार आतंकियों को अपना रहनुमा मान रहे हैं? कौन इस देश से कश्मीर को अलग कर पाकिस्तान को सौंपना चाहता है? कौन संसार के स्वर्ग कश्मीर को नर्क बना रहा है?

ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर टी.वी. चैनल, समाचार पत्रों, वाट्स अप, फेस बुक, यू ट्यूब द्वारा करोड़ों व्यक्तियों को मिलता है और उनके सामने **इस्लाम का चेहरा खड़ा हो जाता है,** क्योंकि तमाम ये राष्ट्रद्रोही व मजहबी उन्माद करने वाले अपने को इस्लाम के अनुयायी बताते हैं। स्वाभाविक है जिस समुदाय के व्यक्तियों द्वारा यह जघन्य आपराधिक कार्य कर देश की जन-धन, शान्ति व सुरक्षा को नष्ट किया जा रहा है वे इस्लाम के मानने वालों में से ही हैं। इस प्रकार आम व्यक्ति की इस्लाम के प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी, भावना होगी यह आप भलि भांति समझ सकते हैं। कम से कम अच्छी तो नहीं होगी यह सत्य है।

किन्तु यहां एक प्रश्न उठता है, क्या इस्लाम के सभी अनुयायी और प्रत्येक मुसलमान इस असंवैधानिक और राष्ट्र घाती कार्य में लिप्त हैं? क्या हर मुसलमान को कश्मीर की परिस्थिति के लिए दोषी माना जावें?

नहीं प्रत्येक मुसलमान न तो ऐसा चाहता है और न ही उसका इन उग्रवादी, आतंकवादी अलगाववादी कार्यों में कोई सहयोग है या रुचि है। देश के मुसलमानों की संख्या का बहुत बड़ा तपका इसे गलत मानता है। लाखों मुसलमान इस राष्ट्र को अपना मादरे वतन, जन्नत मानते हैं। वह इस राष्ट्र से अच्छा जीवन किसी अन्य इस्लामिक कन्ट्री में नहीं मानते हैं वे वहां की अपेक्षा यहां बहुत अपने को अधिक सुरक्षित व सुखी मानते हैं। इसलिए हर मुसलमान इसके लिए दोषी नहीं है। किन्तु यह भी सत्य है कि इन सारी देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त पाकिस्तान के सहयोगी, हिंसा, लूटमार करने वाले अलगाववादी, उग्रवादी, आतंकवादी सभी मुस्लिम सम्प्रदाय के ही हैं?

कुछ समय पहले खालिस्तान की मांग उठी थी, कुछ सिख पंथ के अनुयायी इसे बहुत बड़ा रूप देने के लिए हिंसा, मार काट करने में लगे थे। पंजाब खाली करवाने में जबरन अपनी विचारधारा मनवाने में लगे थे। पवित्र पूजा स्थलों में भी दूषित व हिंसात्मक वातावरण बन रहा था। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या भी इसी सम्प्रदाय के नवयुवकों द्वारा की गई थी। इस कारण पूरे देश में सिख समुदाय के प्रति एक आक्रोश और नफरत सी फैल गई थी। जबकि सारे सिख इस प्रकार के कार्यो के समर्थक नहीं थे, किन्तु फिर भी नफरत व शंका के घेरे में लगभग थे। क्योंकि जो साफ सुथरे राष्ट्र प्रेमी इनसे अलग थे किन्तु वे चुप रहे, उन्होंने अपनों का खुलकर विरोध नहीं किया था।

आज वही स्थिति तेजी से पुनः देश में फैल रही है। सिरफिरे, भ्रमित, नासमझ, चन्द मुसलमानों के अनैतिक कार्यों को मुस्लिम समुदाय की ओर से कोई रोकने के लिए कठोर विरोध नहीं हो रहा। जबकि लाखों की संख्या में इस देश से प्रेम व सद्भाव रखने वाले देश के हितैषी मुसलमान विद्यमान हैं, किन्तु वे मौन हैं। कौम बदनाम हो रही है, इस्लाम के प्रति एक अलग सी विचारधारा बनती जा रही है जिससे देश व संस्कृति का भाव जुड़ा है। चुप रहना इस्लाम के लिए अपनी गरिमा को क्षति पहुंचा रहा है। यदि यही चलता रहा तो एक राष्ट्रीय विचारधारा वाले या सनातन धर्मियों के व इस्लाम के मध्य यह नफरत की खाई और बढ़ती जावेगी। इसलिए उन तमाम मुस्लिम सम्प्रदाय के शान्तिप्रिय, राष्ट्र हितैषी, मानवता की रक्षा करने का विचार रखने वाले तथा साम्प्रदायिक कटुता की भावना से ऊपर इस्लाम के नुमायिन्दों से मेरा आग्रह है कि राष्ट्रहित में देश में हो रही अलगाववादी, आतंकवादी, पाकिस्तान परस्त विचारधारा का खुलकर पूरी ताकत के साथ घोर विरोध करना चाहिए। यदि देश हम सबका है तो फिर देश को हो रही क्षति में हम मौन क्यों रहें ? आज मौन रहना इन अनैतिक कार्यों को एक मौन सहयोग की श्रेणी में लाकर खड़ा कर रहा है, इसे अविलम्ब बदलने की आवश्यकता है। मौन आपके सत्य को नष्टकर देता है, कहा गया **''मौनं सत्यं विन यति''।**

*-मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली*

## जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय : राशि भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017

### आर्यसमाजें, आर्य संस्थाएं एवं दानी महानुभाव अपना सहयोग यथाशीघ्र भिजवाकर पुण्य के भागी बनें

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।** *- विनय आर्य, महामन्त्री*

*- शेष पृष्ठ 7 पर*

## वेद-स्वाध्याय

# आश्चर्य

**विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्त पलितो जगार।**
**देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान।। अथर्व. 9/109**
**ऋषिः बृहदुक्थो वामदेव्यः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः निचृत्त्रिष्टुप्।।**

**शब्दार्थ** - **युवानं सन्तम्** = एक ऐसे नौजवान को **विधुम्** = जोकि विविध काम करने वाला है और **समने** =रण में **बहूनाम्** = बहुतों को **दद्राणम्** =मार भगानेवाला है उसे **पलितः** = एक बुड्ढ़ा **जगार** = निगल जाता है। **देवस्य** = देव के **महित्वा** = इस बड़े महत्त्व वाले **काव्यम्** = काव्य को **पश्य** = देख **कि ह्यःसम्-आन** = कल जो जी रहा था, सांस ले रहा था, **सः** =वही **अद्य** = आज **ममार** = मरा पड़ा है।

**विनय :** हे मनुष्यो! यह आश्चर्य देखो कि जवान को बुड्ढ़ा निगल जाता है। उस पराक्रमी जवान को, जोकि रणस्थली में बहुतों को मार भगाने वाला है, जो बड़े-बड़े-विविध कर्म करने वाला है, ऐसे जवान को एक न जाने कब का बुड्ढा, सफेद बालों वाला बुड्ढा निगल जात है। मनुष्यो! तुमने बेशक बहुत-से मनुष्यकृत किताब और काल्पनिक काव्य पढ़े होंगे, पर आज तनिक इस जीते-जागते सामने होते हुए देव के महान् काव्य को भी देखो, तनिक इस महाकाव्य के भी पन्ने पलटो और पढ़ो जिसमें लिखा है कि ''जो अभी कल जी रहा था वह आज मरा पड़ा है।'' बस, इस दिव्य महाकाव्य में यही लिखा हुआ है।

भाई! क्या तुमने उस जवान को निगलनेवाले बुड्ढ़े को पहचाना? क्या तुम अपनी आंखों के सामने इस दिव्य-काव्य को नहीं देख रहे? क्या देखते हो कि दुनिया में प्रतिदिन जो हज़ारों (एक क्षण पहले तक दूसरों को मार भगाने की शक्ति का गर्व रखते हुए) आदमी मर रहे हैं, उन्हें कौन निगल रहा है? यदि नहीं देखते, तो वेद की किताब में यह पढ़ लेने पर कि आत्मा अपने में प्राणों और इन्द्रियों को प्रतिदिन निगलता है, आदित्य शक्ति 'चन्द्रमस्' को निगलती है और परम बुढ्डा कालरूप परमेश्वर एक दिन इस सब बड़े वेग से क्रियाशील, अगम, महान् ब्रह्माण्ड को (इस चलते-फिरते नौजवान संसार को) भी निगल लेता है, तो यह पढ़ लेने पर भी नहीं देखोगे, यदि तुम्हें यह सहस्रों चतुर्युगियोंवाला कल्पान्त संसार ब्रह्मा का केवल एक दिन नहीं नज़र आता जोकि उसके अगले ही दिन-उसके 'कल' में ही-मरा पड़ा है और यदि तुम्हें इस जगत् की एक-एक घटना इसकी क्षणभंगुरता को नहीं दिखाती, तो तुम्हें वह देव ही एक दिन अपना महत्त्वशाली काव्य पढ़ाएगा और तुम्हें पदार्थ-पाठ देगा-''कल जो जीता था वह आज मरा पड़ा है।''

भाई! देव के इस संसार में आकर यदि हम केवल इस 'अन्त्यिता' को ही सचमुच जान जाएं, केवल यह पाठ पढ़ लें और अतएव कम-से कम अपने बल का, नौजवानी का, कर्म-शक्ति का और दूसरों को मार भगा सकने का घमण्ड छोड़ दें तो बस, यह पर्याप्त है, तब हमने सब काव्य पढ़ लिये और पढ़ाई का फल पा लिया। **साभार : वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

## सम्पादकीय

# बुढ़ापे का दंश झेलते बुजुर्ग

भले ही तेजी से गुजरते समय ने हाथों में आईफोन दे दिए हों लेकिन उन्हीं हाथों से मजबूत रिश्ते छीन लिए हैं इस भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद का सबसे ज्यादा असर इंसानी रिश्तों पर पड़ा है। इन्हीं बदले हुए हालात का सबसे बड़ा दंश झेल रहे हैं हमारे बुजुर्ग। उन्हें आज के इस आधुनिक समाज में कई तरह की परेशानियों को झेलना पड़ रहा है। दिल्ली के भजनपुरा के इलाके की रहने वाली सत्यवती की उम्र भी अब उन पर हावी होने लगी है और उनका शरीर कमजोर होता चला जा रहा है। सत्यवती अपनी पहचान गुप्त रखती है। उसे डर है कि कहीं उनके चार बेटे उन पर हाथ न उठा दें। जिल्लत की जिन्दगी से तंग आकर सत्यवती ने एक वृद्धाश्रम में पनाह ले ली है। ऐसे न जाने कितने बुजुर्ग आज बसेरे ढूंढ रहे हैं।बसेरे भावनाओं के, अपनत्व के। बड़े शहरों की अगर बात की जाए तो सर्वेक्षण बताते है कि बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के मामलों में दिल्ली के हालात बेहतर नहीं हैं।

ऐसी ही एक अन्य महिला बुजुर्ग कांता की उम्र अब 75 साल के लगभग होने वाली है। उनकी आँखें कमजोर हो गई हैं और शरीर भी। ऐसे में जब उन्हें घर पर ही देखभाल की जरूरत है तो उन्हें जुल्म का शिकार होना पड़ रहा है। यह जुल्म कोई और नहीं बल्कि वे लोग कर रहे हैं जिनसे उनका खून का रिश्ता है। तंग आकर कांता ने भी पास के ही एक वृद्धाश्रम में सहारा लिया है। देवीराम हनुमान मंदिर के आसपास आसानी से दिख जाता है। चेहरे पर पड़ी झुर्रियां, आँखों में अजीब सी खामोशी लिए वह कहता है कि मुझपर यह सब कुछ तब आ पड़ा है जब मैं कुछ झेलने के लायक ही नहीं बचा हूँ। अब मेरी आँखों से दिखता नहीं, दांत टूट गए हैं, शरीर कमजोर हो गया है। ऐसे में मुझे घर से निकाल दिया गया। मैं कहाँ जाऊं? बस दिल की एक ही तमन्ना है कि मेरा बेटा किसी दिन मुझसे बोले ''पापा तू कैसा है? तूने खाना खाया या नहीं?''

इस तरह की पीड़ा समेटे अकेले राजधानी दिल्ली की सड़कों और वृद्ध आश्रमों में आपको न जाने कितने लोग मिल जायेंगे जिन्हें अब इंसानी रिश्तों की बात सिर्फ एक मजाक लगती है। वह भले ही खुल कर कुछ नहीं बताते लेकिन अन्दर ही अन्दर घुट-घुटकर जीने पर मजबूर हैं। वे लोग खुशकिस्मत हैं जिन्हें कहीं किसी का सहारा मिल सका है। मगर जिन लोगों को यह सहारा नहीं मिला उन्हें ''बस बहुत हो गया'' कहने की जरूरत है, वे लोग बड़ी तकलीफदेह जिन्दगी गुजार रहे हैं। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो अपने ही बच्चों के यहाँ नौकरों की तरह रहने को मजबूर हैं। शिकायत करें भी तो किसकी? इन्हें तो अपनों ने सताया है। वे अपने जिन्होंने इनकी कोख से जन्म लिया है। इसलिए इनकी तकलीफ बहुत ज्यादा है जो शायद कोई दूसरा महसूस न कर सके। हालांकि बुजुर्गों की अनदेखी करने वाली औलादों के खिलाफ सरकार ने वर्ष 2012 में सीनियर सिटिजन एक्ट 2007 को नए सिरे से लागू किया जिसके तहत 60 वर्ष से ऊपर के व्यक्ति को ''सीनियर सिटिजन'' माना है। इस एक्ट में सजा का प्रावधान रखा गया पर जुल्म सहने के बावजूद बुजुर्ग अपने बच्चों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराना नहीं चाहते। इस एक्ट के प्रावधानों के अनुसार औलादों को अपने माता-पिता को आर्थिक सहायता देनी होती है।

मानव समाज में ऐसा कोई रिश्ता नहीं होता जिसमें तकरार और छोटी-मोटी बातें नहीं होती हैं। लेकिन वही छोटी-छोटी बातें जब बड़े तकरार का रूप ले लेती हैं तब आप चाहे जिंदगी में कितने ही आगे क्यों न बढ़ जाएं लेकिन कहीं ना कहीं दिल के किसी कोने में एक याद हमेशा बनी रहती है जो हमेशा आपसे कहती है कि एक मौका... उस रिश्ते को बचाने के लिए; जो दिया जा सकता था। जीवन में कभी-न-कभी वह घड़ी आती है, जब कई माता-पिता खुद की देखभाल करने के काबिल नहीं रहते और उन्हें मदद की जरूरत पड़ती है। यहाँ तक कि कई बार तो वे अपने दिल में नाराजगी भी पालने लगते हैं और-तो-और, कभी-कभी बुजुर्ग माँ या पिता ठेस पहुँचाने वाली बातें कह देते हैं पर क्या हम सिर्फ इस बात से उनसे किनारा करें कि उन्हें गुस्सा आया या हमें ठेस पहुंची?

***....राजधानी दिल्ली की सड़कों और वृद्ध आश्रमों में आपको न जाने कितने लोग मिल जायेंगे जिन्हें अब इंसानी रिश्तों की बात सिर्फ एक मजाक लगती है। वह भले ही खुलकर कुछ नहीं बताते लेकिन अन्दर ही अन्दर घुटकर जीने पर मजबूर हैं। वे लोग खुशकिस्मत हैं जिन्हें कहीं किसी का सहारा मिल सका है। मगर जिन लोगों को यह सहारा नहीं मिला उन्हें ''बस बहुत हो गया'' कहने की जरूरत है, वे लोग बड़ी तकलीफदेह जिन्दगी गुजार रहे हैं। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो अपने ही बच्चों के यहाँ नौकरों की तरह रहने को मजबूर हैं। शिकायत करें भी तो किसकी? इन्हें तो अपनों ने सताया है।....***

बचपन में हम कई बार रूठते हैं। माता-पिता हमें मनाते ही नहीं वरन हमारी जिद्द भी पूरी करते हैं। इसी तरह कुछ अनबन भी हो तो हमें भी दोबारा उनकी तरफ कदम बढ़ाने चाहिए। ऐसे में अगर आपसे कुछ गलती हुई है तो उसे स्वीकारने में कोई हर्ज नहीं है। माता-पिता हैं जितना जल्दी गुस्सा होते है उतना ही जल्दी माफ भी करते हैं। यह उम्र एक पड़ाव होता है जिसमें भावनात्मक रूप से सहारे की सबसे बड़ी जरूरत होती है।

कई बार अपने प्यारे माता-पिता को ढलती उम्र में होनेवाली तकलीफें झेलते देखकर हमें बहुत दु:ख होता है। उनका खयाल रखने वाले कई बच्चे यह देखकर कभी-कभी उदास हो जाते हैं, परेशान हो जाते हैं, खुद को दोषी महसूस करने लगते हैं, उन्हें चिंता होती है, रह-रहकर गुस्सा आता है, भले ही आप अपने बुजुर्ग माता-पिता से दूर रहते हों, फिर भी आपको तय करना चाहिए कि माता-पिता को रोजाना किस तरह की देखभाल की जरूरत है। अगर आपका घर उनके घर के पास नहीं है तो सप्ताह में कम से कम एक बार उनसे बात जरुर करें। ''हालाँकि उम्र ढलने से होने वाली समस्याओं के बारे में बातचीत करना मुश्किल हो सकता है, लेकिन जब परिवार के सभी सदस्य मिलकर चर्चा करते हैं और पहले से अच्छी योजना बनाते हैं, बुजुर्गों की सेहत उनके रहन-सहन से जुड़े फैसले लेते हैं, तब वे सही चुनाव करने के लिए और भी अच्छी तरह तैयार होते हैं। हमें इस बात को स्वीकार करना चाहिए कि कभी-न-कभी हमें बुढ़ापे में आनेवाली तकलीफों का सामना करना ही पड़ेगा। इसलिए यह बेहद जरूरी है कि एक परिवार के तौर पर हम इनका सामना करने के लिए तैयारी करें। इन जिम्मेदारियों को पूरा करते समय आप तरह-तरह की भावनाओं से गुजरें। बुजुर्गों से बुरा बर्ताव करते वक्त एक बार जरूर सोचें कि कल हम भी बुजुर्ग होंगे तो क्या इस व्यवहार के लिए हम तैयार होंगे?

- ***सम्पादक***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| • प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| • विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| • स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

# इस्लाम को आजादी नहीं नवजागरण चाहिए!

***....पूर्ण शरियत के नाम पर जिस तरह वहां मानवता को रौंदा गया एक बार कथित इस्लामिक विद्वानों को उसे जी भरकर देख लेना चाहिए और इससे सीख लेनी चाहिए क्योंकि यही हालात भविष्य में कश्मीर के बनने वाले हैं। शरियत की मांग करने वाले चाहते हैं कि सरकार के सभी तंत्र इस्लाम के मुताबिक चलने चाहिए, इसका मतलब है कि इस्लाम ऐसी स्थिति की कल्पना ही नहीं करता जिसमें गैर मुसलमान शक्ति या सत्ता में साझीदार बन सकें। शायद इस कारण भी बहुसंख्यक मुसलमान लोकतान्त्रिक ढांचे का विरोध करते दिख जाते हैं। पता नहीं यह समस्या स्थाई क्यों मान ली गयी है।.....***

***.....इस्लाम के शुरुआती दौर में भी इस्लामिक स्टेट जैसे जिहादी गुटों का जन्म हुआ था, मिसाल के तौर पर जब पहले खलीफा अबु बकर ने तलवार उठाई थी और जकात (टैक्स) न देने वाले मुसलमानों के खिलाफ जिहाद की धमकी दी थी। इस काल के बाद यदि मध्य काल की बात करें तो इस्लाम की परम्पराओं को लेकर टकराव हुआ जिसमें अरबी प्रायद्वीप में अलग-अलग मुल्कों की स्थापना लिए संघर्ष हुआ।.....***

स्वतंत्रता को लेकर हर किसी का अपना-अपना अभिप्राय और चाहत होती है। कई सदी पहले मुखर हुई स्वतंत्रता की आवाज आज 21वीं सदी में भी देखने को मिल रही है। ऐसे में सवाल यह उपजता है कि 3 साल चली जंग के बाद इराकी शहर मौसुल आई. एस. यानि इस्लामिक स्टेट के आतंकियों से आजाद हो गया है तो अब मजहबी मानसिकता से कश्मीर आजाद कब होगा? हाल के सालों में स्वतन्त्रता और शरियत के नाम पर फैलते इस्लामी आतंकवाद को समझने और समझाने के लिए कई शब्द चल पड़े हैं जिनमें शामिल हैं- कट्टरपंथी इस्लाम, इस्लामी आतंकवाद, सलाफी-वहाबी इस्लाम, या चरमपंथी इस्लाम और तो और राजनैतिक तौर पर सही बने रहने के लिए ज्यादातर राजनीतिक इस्लाम का सहारा लिया जाता है। उदाहरण के लिए जैसे भारत में आजम खान, ओवेसी बंधू और कश्मीर में अलगाववादी नेता जो राजनीतिक इस्लाम की पैरवी करते आसानी से दिख जाते हैं। लेकिन यह सब सत्ता पर काबिज होने की प्रणाली का हिस्सा है।

समय-समय पर भिन्न-भिन्न समुदायों और पंथों में नवजागरण का काल आया उदाहरणस्वरूप हिन्दू समुदाय में स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय की अगुवाई में 19वीं सदी में राजनैतिक क्षेत्र में स्वाधीनता की भावना का उदय हुआ। धर्म के क्षेत्र में मूर्तिपूजा जैसी अतार्किक आस्था पर स्वामी दयानंद ने प्रश्न उठाए। चिंतन एवं दर्शन के क्षेत्र में परालौकिक चीजों को हाशिये पर डालकर इहलौकिकता की प्रतिष्ठा हुयी। ईश्वर के साथ-साथ मनुष्य भी केंद्र में आया। इन सब चीजों से नवजागरण का वातावरण तैयार हुआ था और उक्त समुदायों ने उस नवजागरण को हाथों हाथ लिया। चूँकि अब मध्य एशिया से लेकर अफ्रीका, यूरोप और भारत तक पहले स्थापित धार्मिक मूल्यों और परम्पराओं में इस्लाम की उम्र कम है तो यहाँ इस्लाम में नवजागरण में अभी समय लगेगा कारण इस्लामिक युवा पूर्ण रूप से अभी इसके लिए तैयार नहीं है। जिस कारण अभी वह चरमपंथ को भी मजहब का जरूरी हिस्सा समझे बैठे हैं।

बहरहाल इराक में इराकी सेना की कार्यवाही लगभग पूर्ण हुई पर शरियत यानि कि पूर्ण इस्लामी शासन के लिए बंधक मौसुल शहर स्वतंत्र तो हो गया लेकिन वहां सिर्फ लाशें और खंडहर दिखाई पड़ते हैं। पूर्ण शरियत के नाम पर जिस तरह वहां मानवता को रौंदा गया। एक बार कथित इस्लामिक विद्वानों को उसे जी भरकर देख लेना चाहिए और इससे सीख लेनी चाहिए क्योंकि यही हालात भविष्य में कश्मीर के बनने वाले हैं। शरियत की मांग करने वाले चाहते हैं कि सरकार के सभी तंत्र इस्लाम के मुताबिक चलने चाहिए, इसका मतलब है कि इस्लाम ऐसी स्थिति की कल्पना ही नहीं करता जिसमें गैर मुसलमान शक्ति या सत्ता में साझीदार बन सकें। शायद इस कारण भी बहुसंख्यक मुसलमान लोकतान्त्रिक ढांचे का विरोध करते दिख जाते हैं। पता नहीं यह समस्या स्थाई क्यों मान ली गयी है।

यदि काल गणना के अनुसार इस्लाम को समय में विभाजित करें तो हकीकत कुछ और ही निकलकर आएगी। पैगम्बर के बाद पहले खलीफा अबु बकर को छोड़ कर, उसके बाद आए सभी तीन खलीफा और शियाओं के 12 इमाम, सब की हत्या हुई थी। कहते हैं कि खुद पैगंबर मोहम्मद ने 27 जंगों में हिस्सा लिया था। इस्लाम के शुरुआती दौर में भी इस्लामिक स्टेट जैसे जिहादी गुटों का जन्म हुआ था, मिसाल के तौर पर जब पहले खलीफा अबु बकर ने तलवार उठाई थी और जकात (टैक्स) न देने वाले मुसलमानों के खिलाफ जिहाद की धमकी दी थी। इस काल के बाद यदि मध्य काल की बात करें तो इस्लाम की परम्पराओं को लेकर टकराव हुआ जिसमें अरबी प्रायद्वीप में अलग-अलग मुल्कों की स्थापना लिए संघर्ष हुआ। इस्लामिक राज्य बने उसके बाद आज सीधे वर्तमान परिदृश्य में आयें तो आप देखेंगे कि मात्र इंसानी नाम चेहरे और स्थान बदले हैं वरना हिंसा का रूप धार्मिक मांग और कृत्य बाकी सब सामान है।

कश्मीर के संदर्भ में अपनी बात रखने के लिए उपरोक्त उदाहरण अनिवार्य से बन जाते हैं और एक कहावत भी है कि जब हम देखेंगे नहीं तो सीखेंगे कहाँ से? आज जो लोग कश्मीर के लोकतंत्र को नकारकर शरियत कानून या आजादी की बात कर रहे हैं उन्हें अतीत के इतिहास से काफी कुछ सीख लेना चाहिए। जो लोग

***- शेष पृष्ठ 4 पर***

# आर्यसमाज के एक और सितारे का अवसान : स्मृति शेष - डॉ.धर्मपाल आर्य

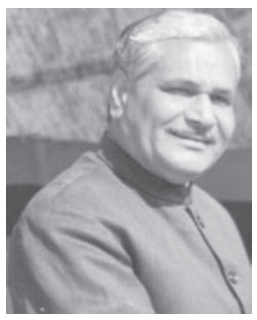

मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ। छोटी-छोटी सी बाधाओं में असहज हो जाता हूं, परन्तु आज तो इस ज्येष्ठ श्रेष्ठ आर्यसमाज की बड़ी एवं अपूरणीय क्षति का दिवस है फिर मैं कैसे अधीर न होऊँ ? वह महान व्यक्तित्व जो आर्यसमाज के आकाश को अपनी शीतल धवल चाँदनी से रोशन कर आज सदा के लिए अस्त हो गया यह स्मरण होते ही हृदय के संतप्त भाव नेत्रों से जल के रूप में प्रवाहित होने लगते हैं। आर्यजगत के कवि शिरोमणि सत्यपाल 'पथिक' द्वारा रचित पंक्तियों की प्रासंगिकता दृष्टिगत हो रही है - 'यह कौन गया है महफिल से हर आँख में आँसु बहने लगे। इस आर्यसमाज की नदिया का एक और किनारा टूट गया।।' संभवत: उनके प्रति यही मेरे श्रद्धासुमन अर्पित करने का उपयुक्त और अंतिम उपाय है। वह महान् व्यक्तित्व डॉ. धर्मपाल जी जो आज हमारे बीच में नहीं है परन्तु उनकी यादें,उनके समाजोपयोगी कार्य सदा हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।उनके उच्च विचार, सरल एवं मृदु व्यवहार तथा सादगी भरी जीवनशैली जन मानस को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करती है। डॉ. धर्मपाल जी का जीवन स्वयं में एक प्रेरणा है, उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बागपत (मेरठ) जनपद के बड़ौत उपनगर में एक संभ्रांत परिवार में19 मार्च 1942 को महाशय ओमप्रकाश आर्य जी व माता श्रीमती बलबीरी देवी जी के घर हुआ। अपने 9 भाइयों में सबसे बड़े एवं होनहार कुशाग्र बुद्धि बालक धर्मपाल था। प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा पैतृक नगर बड़ौत में ही प्राप्त की। सन् 1964 में कृष्णा देवी (बी.ए.) ग्राम उदयपुर जिला हापुड़ (मेरठ) के साथ परिणय सूत्र में बंध गए। पश्चात् एक नए जीवन का सूत्रपात हुआ। सन् 1965 में आप दिल्ली में आ गए थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय से आपने हिंदी विषय में परा स्नातक (एम.ए.) तथा आगरा वि. वि. से अंग्रेजी विषय में (एम.ए) की मानन्द उपाधि प्राप्त की तत्पश्चात् आपने सेंट्रल स्कूल में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। इसके साथ-2 आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से ही हिन्दी विषय में डॉक्ट्रेट (पी.एच.डी.) की मानन्द उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1966 में आपके बड़े पुत्र विनीत तथा 1970 में अनुज पुत्र विवस्वत का जन्म हुआ। आप वर्ष 1972 में डॉ. जाकिर हुसैन कॉलेज में हिन्दी विषय के प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1993 में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के पुरातन गौरव को पुन: स्वर्णमुखरित करने वाली, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के बालिदान की गाथा गाने वाली ऐतिहासिक संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के गरिमामयी पद कुलपति के उत्तरदायित्व को सौंपा। जिसे आपने अपनी योग्यता, नेतृत्व,पुरुषार्थ एवं कार्य कौशल से चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर किया। आपने 1993 से 2001 तक लगभग 8 वर्ष के कार्यकाल में शैक्षिक सुधार के अनेक आधारभूत कार्य किये जिनमें बालक वर्ग के अतिरिक्त बालिका वर्ग (GIRLS WING) का प्रारम्भ कराया। (यू.जी.सी.) से ग्रांट प्राप्त कर पर्यावरणीय-विज्ञान, (एम.बी.ए.) एवं (एम.सी.ए.) कोर्स का शिक्षण प्रारम्भ कराया। यह एक नई पहल थी। आपके द्वारा आर्यसमाज शालीमार बाग की स्थापना ने इस क्षेत्र में एक नई क्रांति प्रदान की। यह हमारे अथवा परिवार के लिए ही नही अपितु आर्यसमाज और क्रांतिभूमि बड़ौत क्षेत्र (उ.प्र.) के लिए भी गौरव की बात है। आप समय अनुपालन के बड़े अभ्यासी एवं ईश्वर में दृढ़ विश्वासी थे। आप अत्यंत मृदुभाषी, सरल व्यवहार, लेखक, प्रभावी वक्ता तथा संगठन को कुशल नेतृत्व प्रदान करने की अद्भुत क्षमता के धनी थे।

आपके पिता महाशय श्री ओमप्रकाश आर्य जी के नेतृत्व में आर्यसमाज बड़ौत ने एक विस्तृत क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। आपने भी पिता के अनुव्रती होकर वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धांतों को आत्मसात् करते हुए आर्यसमाज के मिशनरी के रूप में कार्य किए, वे आज इतिहास के पन्नों में अंकित है। आपने अपनी संतानों को भी उसी प्रकार तराशा जो कुलीन और वैदिक संस्कारों से सराबोर हैं। जीवन के इस साफल्य में आपकी सुघड़ गृहिणी श्रीमती कृष्णा देवी जी का भी पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा है। जिन्होंने जीवन के प्रत्येक दु:ख व सुख में धैर्यपूर्वक आर्यसमाज की धर्मिक व सामाजिक गतिविधियों में सहयोग ही नही किया अपितु बालकों को संस्कारित करने में भी विशेष भूमिका निर्वाह की है।जिसका परिणाम यह है कि विदेशी संस्कृति में जीवन व्यतीत कर रहे बालक यज्ञ आदि के धार्मिक कार्यों, अनुष्ठानों में निरंतर श्रद्धापूर्वक संलग्न और परिवार की स्नेहरूपी डोर में बँधकर पिता के अनुव्रती तथा माता के साथ संमना होकर सेवा शुश्रुषा में सदा तत्पर रहते हैं।

संसार की प्रत्येक शुभ अशुभ क्रिया सृष्टि नियमानुसार ही घटित हो रही है, उसे भला कौन टाल सकता है? 09 जुलाई 2017 तदनुसार आषाढ़ मास 'गुरु-पूर्णिमा' ब्रह्ममुहूर्त वेला में योगियों की भाँति 'गुरुपद' को प्राप्त आप इस लोक से कूच कर गए। परिजनों को संतप्त कर चले। अब तो आपकी यादें, शिक्षाएं ही हमारा मार्गदर्शन करेंगी। आपका जाना आर्य जगत् के लिए अपूरणीय क्षति है।।

***- आचार्य प्रद्युम्न शास्त्री***
***आर्यसमाज शालीमारबाग नई दिल्ली-88***
***चलभाष - 8750555035***

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 17 जुलाई, 2017 से रविवार 23 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20/21 जुलाई, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 जुलाई, 2017


पृष्ठ 3 का शेष

अरब के अमीर इस्लाम का उदाहरण देते हैं उन्हें भी समझ लेना आवश्यक होगा कि कुछ अरब देश इस कारण अमीर नहीं है कि वहां कोई इस्लामिक कानून है बल्कि उसका कारण प्राकृतिक गैस और तेल जैसे खनिज पदार्थ हैं। जबकि कश्मीर जैसे राज्य में ऐसा कुछ नहीं है वहां की सुन्दरता पर्यटकों को आकर्षित करती हैं न कि मजहबी मस्जिदें और इस्लामिक रीति-रिवाज! जो अलगावादी नेता आज कश्मीरी अवाम को पाकिस्तान से जुड़ने की सलाह दे रहे हैं आखिर उनका आधार क्या है? क्या पाकिस्तान में सिन्धी, बलूची, कच्छी खुश हैं? तो कश्मीरी समुदाय कैसे किस लिहाज से उनसे जुड़ पायेगा? दूसरा यदि आज कश्मीर में हिन्दू बहुसंख्यक होता तो क्या वह भारत से दूर जाने की सोचता?

इस कारण विवाद फिर वही घूमकर आएगा। मात्र मजहबी कानूनों से कोई देश खुशहाल नहीं हो सकता; उदाहरण के लिए सीरिया, सूडान, लीबिया, इराक, नाइजीरिया, अफगानिस्तान और खुद पाकिस्तान में कितनी खुशहाली है? कश्मीरी समुदाय इस बात पर भी चर्चा करे। उन्हें स्वीकार करना जरूरी भी है कि दुविधा वाली स्थिति क्यों बनी कि इस्लाम शांतिपूर्ण है और शांतिपूर्ण नहीं भी है? इसलिए इसके यह भी स्वीकार करना आवश्यक होगा कि इस्लाम में मजहबी आतंक और उसकी मांगें असामान्य रूप से विषैली और ताकतवर हैं जो इसे अन्य समुदायों से अलग ही नहीं करती वरन नफरत से देखने की और भी इंगित करती हैं। आज इस्लाम को आजादी नहीं नवजागरण चाहिए। इस्लामिक युवाओं को आगे बढ़कर सच्चाई समझनी होगी। इससे निपटने की जरूरत है लेकिन इससे निपटने के लिए हमें पहले इसे इसके असली नाम से बुलाना होगा। कब तक अपनी बेतुकी मांगों को जायज ठहराने के लिए कुरान की आयतों और हदीसों (पैंगबर की बातें और उनके काम) का हवाला देते रहेंगे। सभी आतंकी गुट लोकतंत्र को खारिज करते हैं। शरियत के नाम पर मानसिक गुलामी की ओर धकेलते हैं इसके बाद यदि कुछ मिलता है तो शरियत के बदले सिर्फ खंडहर जिसका नवीन उदाहरण इराक का मोसुल शहर है। जो हम सबके सामने अपनी प्रस्तुति का हवाला देकर आंसू बहा रहा है।

*-राजीव चौधरी*

*प्रतिष्ठा में,*


**श्री देवतीर्थ गंगा गुरुकुल आश्रम**

352, रामकुटीर, ब्रजघाट, गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ (उ0प्र0) के

द्वितीय वार्षिकोत्सव एवं

**श्री देवतीर्थ कन्या गुरुकुल**

के स्थापना के उपलक्ष्य में

रविवार 23 जुलाई 2017 को

**पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ**

का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

आप सभी सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।


### आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

## श्री राकेश चौहान, श्री रविकान्त गुप्ता एवं श्री योगेश गुप्ता पुनः प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का त्रैवार्षिक निर्वाचन 2 जुलाई, 2017 को आर्यसमाज बक्शी नगर में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से पुनः श्री राकेश चौहान जी को प्रधान, श्री रविकान्त गुप्ता को मन्त्री एवं श्री योगेश गुप्ता को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया गया। श्री भारत भूषण गुप्ता जी को उप प्रधान निर्वाचित किया गया।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।**

श्री राकेश चौहान
प्रधान

श्री रविकान्त गुप्ता
महामन्त्री

श्री योगेश गुप्ता
कोषाध्यक्ष


दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

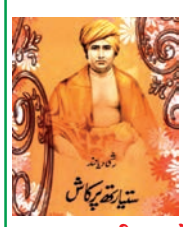

महर्षि दयानन्दकृत

**सत्यार्थ प्रकाश**

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र

100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,

मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह